# बैंगन की खेती

- बैंगन का जन्म स्थान भारत है
- अधिक उपज एवं लाभ मिल सकता है

# प्रजातियाँ

# गोल फल वाली प्रजातियां

| क्र. सं | प्रजातियां | पकने की अवधि | उपज (कु./ हे.) |
|---|---|---|---|
| 1. | पंत ऋतुराज | 60-65 | 400 |
| 2. | बी.आर.-14 | 65-70 | 400 |
| 3. | के.एस.-224 | 65-70 | 350 |
| 4. | काशी सन्देश | 65-70 | 600-700 |
| 5. | पूसा हाइब्रिड-6 | 65-70 | 450-500 |

# लम्बे फल वाली की प्रजातियाँ

| क्र. सं | प्रजातियां | पकने की अवधि | उपज (कु./ हे.) |
|---|---|---|---|
| 1. | पंत सम्राट | 65-70 | 300 |
| 2. | आजाद क्रांति | 65-70 | 250 |
| 3. | पूसा पर्पिल लांग | 70-75 | 250 |
| 4. | आई.वी.बी.एल.-9 | 60-65 | 350 |
| 5. | पूसा हाइब्रिड-5 | 55-60 | 600-700 |

# खेत की तैयारी

- जीवांशयुक्त दोमट भूमि से अच्छी
- खेत की पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करके 2-3 जुताई देशी हल या कल्टीवेटर से
- पाटा लगाकर खेत को समतल तथा भुरभुरा बना लेना चाहिए

# बीज की मात्रा एवं रोपाई

## शरदकालीन फसल

- बुवाई : मई-जून
- रोपाई : जून -जुलाई

## बसंत कालीन

- बुवाई : नवम्बर-दिसम्बर
- रोपाई : दिसम्बर – जनवरी

# वर्षा ऋतु की फसल

- बुवाई : मार्च-अप्रैल
- रोपाई : अप्रैल-मई

# बीज की मात्रा

- सामान्य प्रजातियों में 400-450 ग्राम/ हेक्टेयर
- संकर प्रजातियों में 250-300 ग्राम / हेक्टेयर
- बीज शोधन 2 ग्राम थीरम या कैप्टान से प्रति किलोग्राम बीज

- पौध तैयार करने के लिए 15-20 सेंटीमीटर ऊंची उठी हुई क्यारी बनानी चाहिए
- क्यारी की चौड़ाई 1 मीटर एवं आवश्कतानुसार 5-10 मीटर लम्बी बनानी चाहिए
- क्यारियों में लाइन से लाइन की दूरी 10 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 5 सेंटीमीटर रखनी चाहिए

- बीज को एक से डेढ़ सेंटीमीटर गहराई पर बोना चाहिए
- बुवाई के बाद क्यारी में बीज को सड़ी गोबर की खाद की एक सेंटीमीटर मोटी तह लगाकर ढक देते है
- रोपाई हेतु पौध 4-6 सप्ताह में तैयार हो जाती है

- पौध की रोपाई लाइनो में करनी चाहिए
- लाइन से लाइन की दूरी 75 सेंटीमीटर एवं पौधे से पौधे की दूरी 50 सेंटीमीटर रखनी चाहिए
- अधिक बढ़ने वाली तथा फैलने वाली प्रजातियों में पौधे से पौधे की दूरी 85-90 सेंटीमीटर

# खाद एवं उर्वरक

- आख़िरी जुताई में 250-300 कुंतल सड़ी गोबर की खाद, खेत में अच्छी तरह से मिला देना चाहिए
- मृदा परीक्षण के आधार पर उर्वरको का प्रयोग लाभदायक रहता है

- 130-150 किलोग्राम नत्रजन / हेक्टेयर
- 60 किलोग्राम फास्फोरस / हेक्टेयर
- 60 किलोग्राम पोटाश / हेक्टेयर

- नत्रजन की एक तिहाई मात्रा फास्फोरस एवं पोटाश की पूरी मात्रा पौध रोपण के समय देना चाहिए
- शेष नाइट्रोजन की दो तिहाई मात्रा को टॉप ड्रेसिंग के रूप में पौध रोपाई के 30 दिन तथा 45 दिन बाद देना चाहिए

# सिचाई

- सिचाई भूमि की किस्म और वातावरण पर निर्भर करती है
- अत्यधिक सिचाई करने से फसल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है
- बैगन की पौध रोपण के बाद पहली सिंचाई हल्की की जाती है

- यदि सम्भव हो तो हजारे की सहायता से पौधों के थालो में 2-3 दिन तक सुबह और सांयकाल पानी देना चाहिए
- गर्म मौसम में 7-8 दिन के अंतराल पर तथा सर्दी में 12-15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करनी चाहिए

- वर्षा ऋतु में सिचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती, यदि इस समय काफी दिनों तक बरसात न हो तो आवश्यकतानुसार सिचाई करनी चाहिए
- फसल में आवश्यकता से अधिक पानी एकत्र होने पर पानी को खेत से निकलने का उचित प्रबंध होना चाहिए

# खरपतवार नियंत्रण

- पौध को रोपने के 50-60 दिन तक खेत को खरपतवार रहित रखना चाहिए
- 2-3 निराई-गुड़ाई की आवश्यकता
- वर्षाकालीन फसल में 3-4 निराई-गुड़ाई करनी चाहिए

- पौधे जमीन पर न गिरे इसके लिए पौध रोपण के 30-35 दिन बाद निराई-गुड़ाई करते समय पौधों की जड़ो के पास मिटटी चढ़ा देनी चाहिए

# रोग नियंत्रण

- फोमोप्सिस अंगमारी
- फल सड़न
- छोटी पत्ती रोग
- पत्तियों के धब्बे
- जीवाणु उकठा रोग

# फोमोप्सिस अंगमारी तथा फल सड़न

- पत्तियों पर छोटे-छोटे गोल भूरे धब्बे बन जाते है
- रोगी पत्तियां पीली पड़कर सूख जाती है
- फलो पर धब्बे में धूल के कणो के सामान भूरी रचना दिखाई पड़ती है, जो बाद में बढ़ जाती है

# नियंत्रण

- बीज की बुवाई बीज शोधन करके करनी चाहिए
- ब्लाईटाक्स 50 या मैन्कोजेब की 2.5 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव 8-10 दिन के अंतराल पर करना चाहिए

# छोटी पत्ती रोग

- यह रोग माइक्रोप्लाज्मा के कारण होता है
- पौधों की पत्तियां आकर में काफी छोटी रह जाती है
- रोगी पौधों में प्रायः फूल नहीं बनते है

## नियंत्रण

- रोगी पौधों को उखाड़कर जला देना चाहिए
- रोग फैलाने वाले कीट को नष्ट करने के लिए मेटासिस्टाक्स की 0.1% घोल का छिड़काव करना चाहिए

# पत्तियों के धब्बे

- यह रोग फफूंदी के कारण होता है
- पत्तियों पर अनियमित आकर के भूरे धब्बे बनते है, रोगी पत्तियां सूखकर गिर जाती है

# नियंत्रण

- बीज की बुवाई बीज शोधन करके करनी चाहिए
- ब्लाईटाक्स 50 या मैन्कोजेब की 2.5 ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव 8-10 दिन के अंतराल पर करना चाहिए

# जीवाणु उकठा

- यह जीवाणु जनित बीमारी है
- रोग का प्रभाव पहले निचली पत्तियों से आरम्भ होता है
- तने को काटने पर भूरा जमा हुआ पदार्थ दिखाई देता है रोगग्रस्त पौधे सूख जाते है

# नियंत्रण

- अवरोधी या सहनशील प्रजातियों की बुवाई करनी चाहिए
- स्ट्रेप्टोसाईक्लीन 100 मिलीग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर पौधों को आधा मिनट तक डुबोकर रोपाई करनी चाहिए

# कीट नियंत्रण

- तना एवं फल छेदक
- जैसिड
- लाल माइट

# तना एवं फल छेदक

- सूंडियां बैंगन के पौधों के तनो एवं पत्तियों के डंठल में घुस जाती है और उन्हें अंदर से खाती है
- क्षतिग्रस्त भाग से पौधा सूख जाता है

# रोकथाम

- नीम की गिरी 40 ग्राम को पीसकर प्रति लीटर पानी में घोलकर 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव
- डेसिस 28 ई.सी. 1 मिलीलीटर को 2 लीटर पानी या कार्बोसल्फान 25 ई.सी. 2 मिलीलीटर को 1 लीटर पानी में घोलकर 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव

# जैसिड तथा लाल माइट

- प्रौढ़ एवं शिशु दोनों ही हानि पहुँचाते हैं
- कीट पत्तियों की निचली सतह से रस चूसते है
- प्रभावित पत्ती पीले रंग की हो जाती है जो बाद में लाल रंग की भूरी होकर झड़ जाती है
- पौधों की बढ़वार रुक जाती है

# रोकथाम

- फसल की शुरू की अवस्था में मेटासिस्टाक्स 25 ई.सी. या साइपरमेथ्रिन 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी मे घोल बनाकर छिड़काव

# तुडाई एवं उपज

- फलों की तुड़ाई मुलायम अवस्था में की जानी चाहिए
- बैंगन का फल लगने के लगभग 8-10 दिन बाद तोड़ने योग्य हो जाता है

## लम्बे बैगन

- 300-350 कुंतल प्रति हेक्टेयर

## गोल बैगन

- 350-400 कुंतल प्रति हेक्टेयर

## संकर प्रजातियों

- 500-600 कुंतल प्रति हेक्टेयर